महीप सिंह के उपन्यासों में महानगरीय – बोध

डॉ. मंजूर सैय्यद, संगीता गव्हाने

शोधार्थी : हिंदी अनुसंधान केन्द्र नाशिकरोड महाराष्ट्र

महीप सिंह : का जन्म 15 अगस्त 1930 को उत्तर प्रदेश के जिला उन्नाव की उन्नाव तहसील के अंतर्गत नई सराय गॉव के एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। महीप सिंह का गॉव गुजरात जिले का सराय आलमगीर है। जो विभाजन के बाद पाकिस्तानी है। यहॉ वे कई साल पहले रोजी रोटी की तलाश में आकर बसे। महीप सिंह ने अपनी प्राथमिक शिक्षा कलक्टर गज के सरकारी स्कूल में माध्यमिक शिक्षा मारवाडी विद्यालय से डी.ए.वी कॉलेज से एम.ए. हिंदी तक की पढाई की। महीप सिंह ने सन 1963 में "गुरु गोविंद सिंह और उनकी कविता" विषय पर आगरा विश्वविद्यालय से पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की।

महानगर बोध : अवधारणा : डॉ. भगवानदास शर्मा : "महानगरीय संवेदना का बोध वह बोध है जो महानगरीय परिवेश के कारण वहॉ रहनेवालों की जिंदगी में और जीवन चर्या में ऐसा प्रभाव पैदा करें और सत्रास पैदा होता है। कुल मिलाकर एक ऐसी उथल–पूथल होती है जिसके मध्य जिंदगी का हर क्षण संघर्ष की यंत्रणा से गुजरता हो।"

डॉ.महीप सिंह– "महानगरों के जीवन मुझे यह लगता है, कि यहॉ मनुष्य का धीरे धीरे अमानवीकरण बनते जा रहे है। पूँजीवादी समाज व्यवस्था किस वरह समाज में जीते हुए व्यक्ति को असामाजिक कूर, स्वार्थी, कुटिल और असुरक्षित बनाती है, इसका भयावह रुप महानगरों में विशेष रुप से दिखाई देता है।" आधुनिक काल में महानगरीय जीवन में हर तरह का परिवर्तन हो रहा है। महानगरीय लोगों का जीवन अधिक गतिमय है। महानगरों का विकास हो रहा है, परंतु इूसरी ओर महानगरों में अनेक भयावह समस्याएँ निर्माण हो रही है। महाभयानक जनसंख्या के कारण आवास, गंदगी तथा स्वास्थ की समस्या बढ रही है। औद्योगिकीकरण, यांत्रिकीकरण, की तेज होती प्रकिया से नगर और महानगर का निर्माण हुआ। आदमी अपनी पहचान खो देता है। वह आत्मकेंद्री बनकर अजनबीपन–अकेलेपन से घिरता है। खून, लूटपाट, विश्वासघात अमानवीय, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, नैतिक अधःपतन आवास–समस्या, प्रदूषण आदि के कारण मानवीय जीवन आस्थिर बन गया है। समाज में व्यक्तिवाद मूल्यावान है इससे मानव धीरे धीरे अमानवीय होता जा रहा है। आज के आधुनिक तकनिकी युग में हर व्यक्ति अपने काम में व्यस्त रहता है। पारिवारिक संबंध औपचारिक बनते जा

रहें है। भाग–दौड भरी जिंदगी के कारण मनुष्य को एक–दूसरे के सुख–दूःख में सम्मिलित होने का समय नही है। फीर भी वह कभी–कभी निस्वार्थ भाव से किसी की सहायता करता है।

अतः महानगरीय बोध वही है, जो स्वाधिनता के बाद का विकसित शहर जिसमें नये तंत्रज्ञान के नूसार नविनीकरण विकसित है आसमान को छती इमारते है करखाने भी है। आय टी पार्क एवं नये शैक्षिक सूविधाओंका निर्माण हो कर समाज उनका उपयोग कर रहा है। लेकिन शहर में विकास के साथ अनेक दोष भी है। यही है, महानगर बोध। महीप सिंह के

उपन्यासों में महानगरीय बोध : महीप सिंह की लगभग पचास वर्षॉसे भी अधिक समय में उनकी शताधिक कहानियॉ प्रकाशित हो है। तीन ही उपन्यास है लेकिन ये तिनों उपन्यास उच्च कोटी के माने जाते है।

महीप सिंह का लेखन विशेषकर महानगर तथा महानगरीय जनसंवेदना से संबध्द रहा है। महीप सिंह हमेशा महानगरों में रहे। वहीं के जीवन को उन्होने समझा विशेष रुप से मध्यवर्ग के जीवन को। कानजूर मुबंई और दिल्ली रहे। तो यह स्वाभाविक ही है, कि उनके उपन्यासों मे इन महानगरों के चरित्र, महानगरों मे जीते लोगो का जीवन उनका सुख–दुःख, उनके संघर्ष आदि ही है। महानगरों के जीवन को सबसे बडा संकट मुझे यह लगता है, कि यहॉ मनुष्य का धीरे–धीरे अमानवीयकरण होता जा रहा है। सभी सम्बंध खुलकर व्यावसायिक बनते जा रहे है। पूँजीवादी समाजव्यवस्था किस तरह समाज में जीते हुए व्यक्ति को असामाजिक कूर, स्वार्थी,कुटील और असुरक्षित बनाती है, इसका भयावह रुप महानगरों में विशेष रुप से दिखाई देता है। इस दृष्टिसे उनके उपन्यासए है 'यह भी नहीं' (1976) , 'अभी शेष है', (2004) , 'बीच की युप' (2010) ,

इन उपन्यासों में पठनीयता, प्रासंगिकता, मौजुद है। महीप सिंह का पहला उपन्यास यह भी नहीं महानगरीय जीवन पर आधारित है। जापान यात्रा के दौरान लिखा।

महीप सिंह ने महानगरीय परिवेश और उसके मध्य बनते बिगडते, मानवीयसंबंधो का चित्रण किया है इस संदर्भ में अनिल कुमार लिखते है कि महानगरीय जीवन की आधुनिकता से प्रभावित उलझे जटिल संबंधो के भीतर टूटती, पनाह खोजती बेपनाह जिंदगी का जितना यथार्थ अंकन इस उपन्यास में हुआ है वैसा कम ही उपन्यासों में हो पाता है। इस उपन्यास के केंद्र में मुंबई महानगर है जिसमें तेज चलती जिंदगी के बीच स्त्री–पुरुष संबंधों का वर्णन है। यह उपन्यास लगभग आज सभी महानगरों की मध्यवर्गीय जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करता है। अपन्यास में मुंबई के मध्यवर्गीय और उच्च और निम्नवर्गीय जीवन का चित्रण है। अनेक भागों से आकर धारे–धीरे मुंबई का होने लगता है। ये लोग अधिकतर आजीविका की तलाश में अति है। ये उपन्यास मुंबई के की जिंदगी का केंद्रीय स्पंदन है। शांता के माध्यम से मुंबई के फिल्म जगत के कृत्रिम, बनावटी, तात्कलिक मोहक लेकिन अंदर से अत्यंत चोखले वातावरण के अनेक रुप प्रस्तुत किए है। अंग्रेजी के प्रोफेसर

सोहन से प्यार करती है, दानों एक–दुसरे के आकर्षण में फॅसकर दिल्ली से भागकर मुंबई चले आते है और शादी कर लेते है। शांता एक बेटै को जन्म देने के बावजूद भी जीत खोसला, दर्शन, विकास, प्रभाकर राय, प्रीतमलाल जैसे अनेक प्रेमी बनाती है। फिर भी उसके जीवन में ठहराव नही आ पाता। छूसरी ओर पंकज और संतोष जैसे पती–पत्नी भी है जो मुंबई जैसे महानगर में रहते हुए भी परस्पर तालमेल से दाम्पत्य जीवन निभाते है। पंकज और उसकी पत्नी को देखकर शांता का खुद में बदलाव लाने का मन होता है लेने की स्थिती पंकज भी शांत के प्रति सहानूभूति रखते हुए भी वास्तविकता को अपनी पत्नी के समक्ष रखते हुए कहता है– जो लोग कश्मीर जाते है, वे नावों पर बने मकानों में ठहरते है जिन्हे बोट हाउस कहते है। मिसेस अरोडा शांता बंम्बई में रहते हुए भी बोट हाउस में रहती है। प्रादेशिकता को राजनीतिक रंग देकर 'मुंबई आमची आहे' का नारा लगाकर बंद का आयोजन और तत्संबंधी तोड–फोड की समस्या, मुंबई के मकानों की समस्या बाजारु फिल्मों के निर्माण और उससे जनता को मूर्ख बनाने की समस्या, क्लबों और होटलों की कृत्रिम एवं भ्रष्ट जिंदगी की समस्या पश्चिम की भोंडी नकल और बुद्धिजीवियों के लिए चुनौति उत्पन्न होने वाले भगवानों की समस्या उपन्यास की महत्वपूर्ण विवृत्तियॉ है।

महीप सिंह के मलानुसार 2004 में प्रकाशित 'अभी शेष है' उपन्यास उपन्रास त्रयी का पहला पडाव है। उपन्यास की सारी घटनाएँ दिल्ली महानगर में घटती है। अभी शेष है, उपन्यास की मुख्य कथा 1970 से 1975 तक के कालखंण्ड की है। साथ ही विभाजनपूर्व पंजाब से विस्थापित सिख समुदाय की कथा का भी वर्णन है। क्लैमर नामक साप्ताहिक पत्र का संपादक पत्रकार प्रोफेसर निरवैर सिंह आनंद, उसकी सहकर्मी और सहयोगी सुनन्दो और आनंद की पत्नी कोमल इन पात्रों के मानवीय सम्बंधो त्रिकोण का मर्मस्वर्शी चित्रण अभी शेष है उपन्यास में हुआ है। बदलते हुए परिवेश में बदलते जीवन और उसकी समस्याओं के बीच स्त्री की स्थिति को लेकर महीप सिंह हमेशा चिंतित रहे है। नायक आनंद के माध्यम से स्त्री के दो वर्ग बताते है स्त्रियॉ दो प्रकार की होती है। एक जिन्हें मॉ जाति की कहा जा सकता है और दूसरी वे जिन्हें प्रिया जाति की माना जा सकता है। ऋतुओं की तुलना की जाए तो एक वर्षा की भॉति होती है वह घुमडते हुए बादलों स जल की वर्षा करती है, धरती तपीश दूर करती है, हमें तृप्त करती है, वह हमारी नस नस में उन्माद भर देती है। हमें इस प्रकार उद्वेलित करती है कि व्यक्ति तुरंत एक स्वप्निल संसार में पहुँचकर उसमें डूब जाना चाहता है।

अभी शेष है उपन्यास में मनजीत और सुनंदा के माध्यम से नारी समस्या को उठाया गया है। मनजीत और कमलजीत एक दूसरे से प्रेम करते है लेकिन उन दोनो का विवाह नहीं हो पाता। मनजीत का विवाह लखनउ के मनमोहन के साथ होता है। मनमोहन पढा–लिखा और काबिल तो है लेकिन शक्ल–सूरत से मनजीत के काबिल नही। शादी के बाद मनजीत को मनमोहन के साथ

अमरिका जाना पडता है। मनमोहन कॉम्पेक्स का शिकार हो जाता है, उसे मनजीत का सजना संवरना भी अच्छा नहीं लगता मनजीत स्वयं अपनी दास्तॉ बयान करते हुए आनंद से कहती है। मै किस मौके पर क्या पहनती हूँ, कैसा मेकअप करती हूँ कितनी चुडियॉ पहनती हूँ। माथे पर कैसी बिंदी लगाती हूँ इसमें भी बडी टोका टाकी करते है। कभी कहते है साडी पहनो, कभी अपनी मर्जी से साडी पहन लूँ तो नाराज हो जाते है। कहते है साडी बदलो सलवार कमीज पहन आओं।... अक्सर कहते है, अमेरिका आई हो, अमेरिकनों कि तरह बनों। हिंदूस्तानियों वाली भोंडी आदते छोडो।

निष्कर्ष– उपरोक्त महापसिंह के उपन्यास में महानगरीय बोध से स्पष्ट है, कि

1 महापसिंह ने भारत के मुंबई एवं दिल्ली कलकत्ता महानगर के प्रासंगिक अनुभव बोध को उल्लेखित किया है, जिसमें अपने समय का वास्तव है।

2 महानगर के मध्यवर्ग की अनेक समस्याएँ है बेरोजगारी में युवाओं को तडपाया है। तो, महँगाई ने – जीवन को परेशान किया है।

3 महानगर में असफल प्रेम एवं पारिवारिक संघर्ष तथा आर्थिक समस्याएँ दिखायी देती है।

4 महिपसिंह के उपन्यासों की महिलाएँ वैयक्तिक समस्याओं से परेशान होकर विकास के लिए अनेक षड्यंत्र में फॅसी हुया है।

5 उच्चवर्ग केवल ऐशोआराम की जींदगी चाहता है। और मध्यवर्ग, निम्म वर्ग का शोषन करता है।

6 महानगर की झोपडिया अपने विकलांगता, दरिद्रता, भद्रता का दर्शन कराती हैं।

संदर्भ सूची :

कथाकार महीप सिंह – संपादक – गुरचरण सिंह
महानगर बोध – डॉ भगवान दास वर्मा
डॉ कमलेश सचडे पृ. 35
करक कलेजे मांही – कमलेश सचदेव पृ. 197
महीप सिंह रचनावली – खंड1 संपा. अनिल कुमार
यह भी नहीं महीप सिंह पृ–147
अभी शेष है– महीप सिंह पृ. 78
महीप सिंह रचनावली – खंड–3 अनिल कुमार